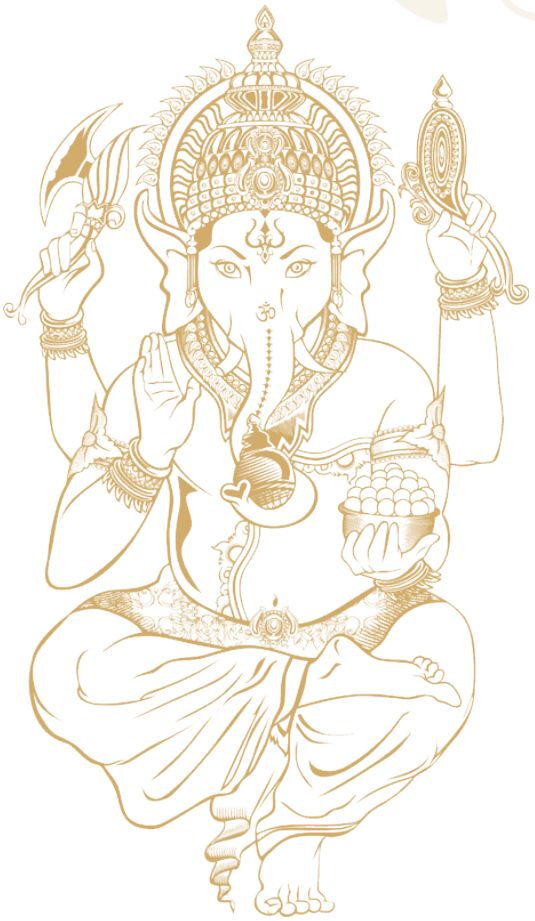

Yogesh

10 Dec 1987

11:20 PM

Akole

Model: Web-MyKundli

Order No: 120438901

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**10/12/1987**
दिन	गुरुवार
जन्म समय	**23:20:00 घंटे**
इष्ट	41:20:07 घटी
स्थान	**Akole**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	17:30:13 उत्तर
रेखांश	75:22:22 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:28:31 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	22:51:29 घंटे
वेलान्तर	00:07:28 घंटे
साम्पातिक काल	04:07:11 घंटे
सूर्योदय	06:47:57 घंटे
सूर्यास्त	17:54:14 घंटे
दिनमान	11:06:17 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	हेमन्त
सूर्य के अंश	24:26:29 वृश्चिक
लग्न के अंश	09:28:18 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी	**कर्क - चन्द्र**
नक्षत्र-चरण	**आश्लेषा - 3**
नक्षत्र स्वामी	बुध
योग	वैधृति
करण	गर
गण	राक्षस
योनि	मार्जार
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	डे-डेविड
पाया(राशि-नक्षत्र)	लौह - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	धनु

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1909	मार्गशीर्ष	19
पंजाबी	संवत : 2044	मार्गशीर्ष	25
बंगाली	सन् : 1394	मार्गशीर्ष	24
तमिल	संवत : 2044	कार्तिगई	24
केरल	कोल्लम : 1163	वृश्चिकम	24
नेपाली	संवत : 2044	मार्गशीर्ष	25
चैत्रादि	संवत : 2044	पौष	कृष्ण 5
कार्तिकादि	संवत : 2044	मार्गशीर्ष	कृष्ण 5

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 5
तिथि समाप्ति काल _____: 22:49:11
जन्म तिथि _____: 6
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: पुष्य
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 07:04:50 घंटे
जन्म योग _____: आश्लेषा
सूर्योदय कालीन योग _____: ऐन्द्र
योग समाप्ति काल _____: 18:45:16 घंटे
जन्म योग _____: वैधृति
सूर्योदय कालीन करण _____: कौलव
करण समाप्ति काल _____: 09:29:24 घंटे
जन्म करण _____: गर
भयात _____: 40:37:56
भभोग _____: 67:43:12
भोग्य दशा काल _____: बुध 6 वर्ष 9 मा 15 दि

घात चक्र

मास _____: पौष
तिथि _____: 2-7-12
दिन _____: बुधवार
नक्षत्र _____: अनुराधा
योग _____: व्याघात
करण _____: नाग
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मेष
लग्न _____: तुला
सूर्य _____: सिंह
चन्द्र _____: सिंह
मंगल _____: कन्या
बुध _____: मिथुन
गुरु _____: तुला
शुक्र _____: वृश्चिक
शनि _____: कर्क
राहु _____: धनु

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

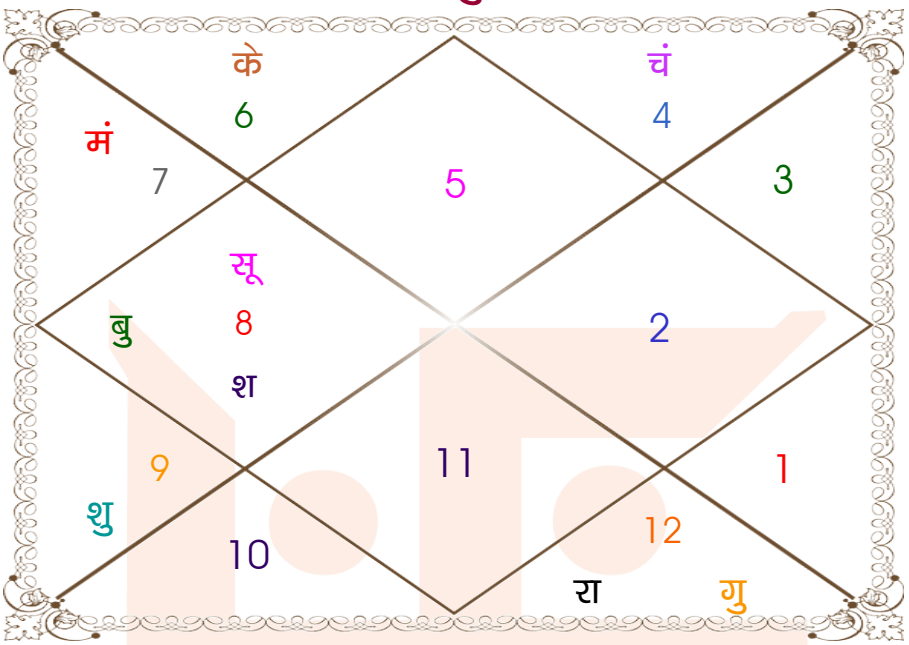

चन्द्र कुंडली

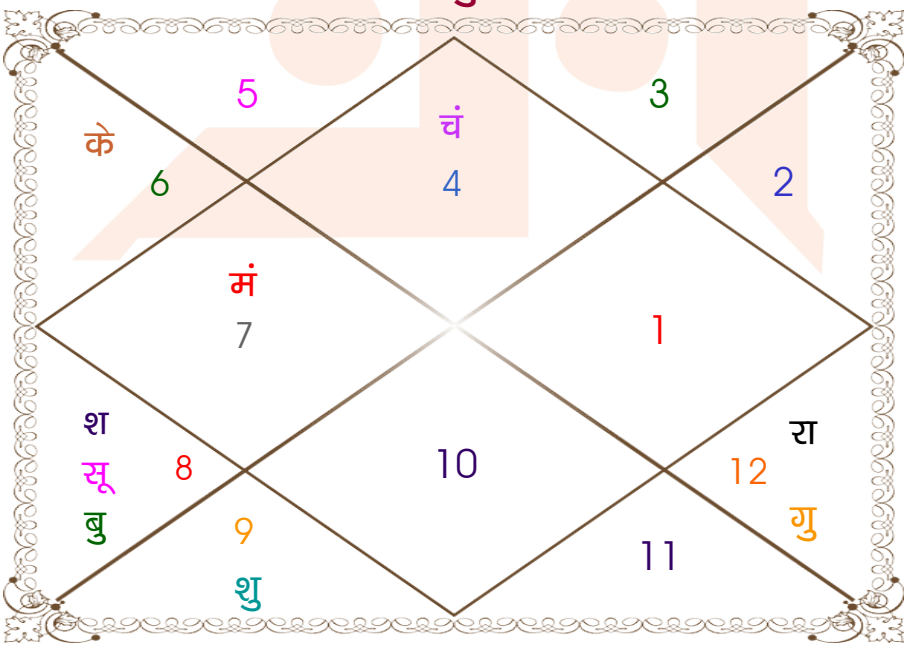

Pandit Srinivas Srimali, Pandit Jitendra Srimali
No. 130, Mint Street, 3rd floor, Sowcarpet, chennai - 600079
9884182821, 9841085352
Jksrimali27@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

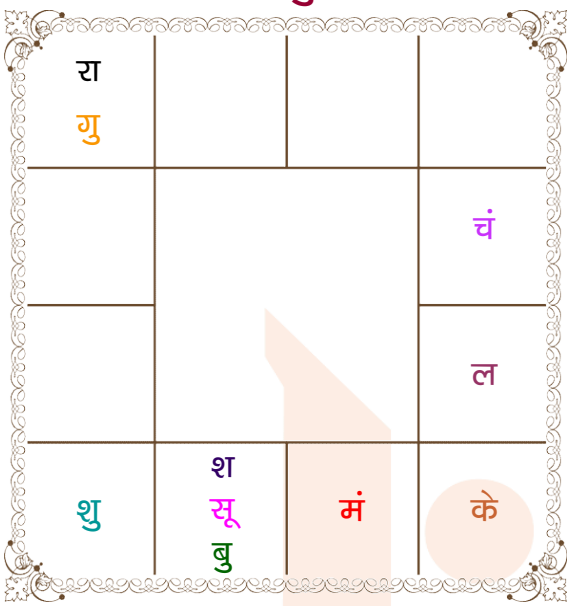

लग्न कुंडली

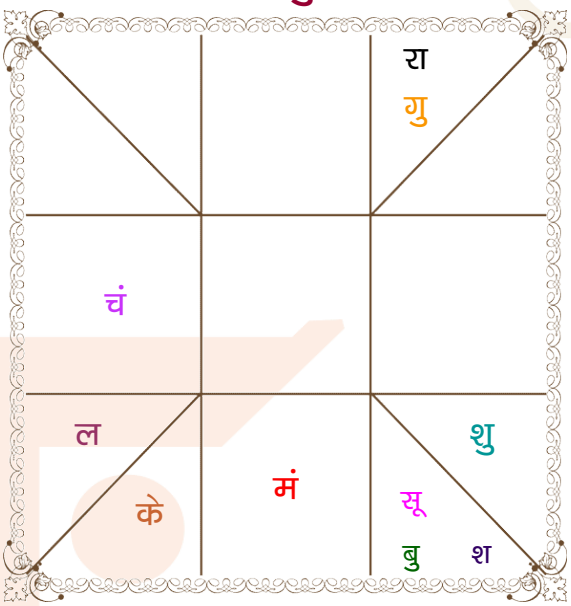

विंशोत्तरी
बुध 6वर्ष 9मा 15दि

बुध

10/12/1987

25/09/2097

बुध	26/09/1994
केतु	25/09/2001
शुक्र	25/09/2021
सूर्य	26/09/2027
चन्द्र	25/09/2037
मंगल	25/09/2044
राहु	26/09/2062
गुरु	26/09/2078
शनि	25/09/2097

योगिनी
भ्रामरी 1वर्ष 7मा 5दि

भद्रिका

16/07/2025

17/07/2030

भद्रिका	27/03/2026
उल्का	25/01/2027
सिद्धा	15/01/2028
संकटा	24/02/2029
मंगला	16/04/2029
पिंगला	26/07/2029
धान्या	26/12/2029
भ्रामरी	17/07/2030

Pandit Srinivas Srimali, Pandit Jitendra Srimali
No. 130, Mint Street, 3rd floor, Sowcarpet, chennai - 600079
9884182821, 9841085352
Jksrimali27@gmail.com

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	09:28:18	338:46:21	मघा	3	10	सूर्य	केतु	शनि	---
सूर्य			वृश्चि	24:26:29	01:00:58	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	राहु	मित्र राशि
चंद्र			कर्क	24:40:20	11:48:20	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	राहु	स्वराशि
मंगल			तुला	17:11:43	00:39:28	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	शुक्र	सम राशि
बुध		अ	वृश्चि	17:29:13	01:33:36	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	सम राशि
गुरु	व		मीन	26:06:54	00:01:00	रेवती	3	27	गुरु	बुध	गुरु	स्वराशि
शुक्र			धनु	22:02:07	01:14:24	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	शनि	सम राशि
शनि		अ	वृश्चि	29:16:24	00:07:05	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	शनि	शत्रु राशि
राहु	व		मीन	04:48:44	00:04:48	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	सम राशि
केतु	व		कन्या	04:48:44	00:04:48	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	शनि	शत्रु राशि
हर्ष			धनु	02:41:27	00:03:36	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	---
नेप			धनु	13:18:10	00:02:10	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	---
प्लूटो			तुला	17:40:12	00:02:03	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	सूर्य	---
दशम भाव			वृष	10:06:50	--	रोहिणी	--	4	शुक्र	चंद्र	चंद्र	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:41:19

लग्न-चलित

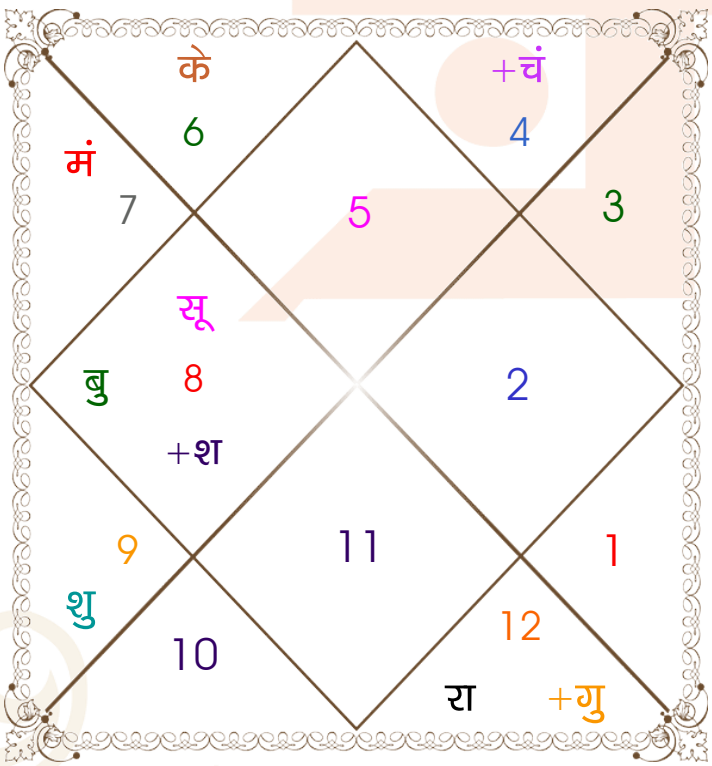

चन्द्र कुंडली

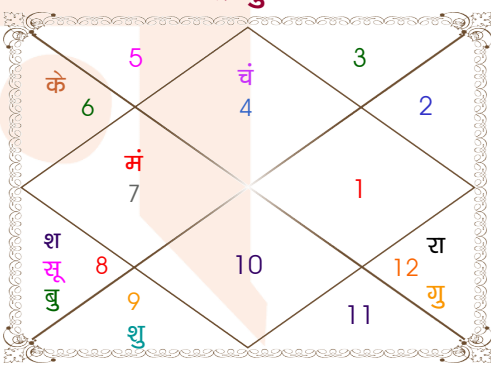

नवमांश कुंडली

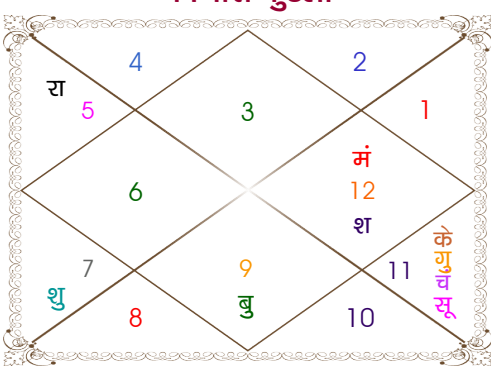

Pandit Srinivas Srimali, Pandit Jitendra Srimali
No. 130, Mint Street, 3rd floor, Sowcarpet, chennai - 600079
9884182821, 9841085352
Jksrimali27@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कर्क	24:34:43	सिंह	09:28:18
2	सिंह	24:34:43	कन्या	09:41:09
3	कन्या	24:47:34	तुला	09:53:59
4	तुला	25:00:24	वृश्चिक	10:06:50
5	वृश्चिक	25:00:24	धनु	09:53:59
6	धनु	24:47:34	मकर	09:41:09
7	मकर	24:34:43	कुम्भ	09:28:18
8	कुम्भ	24:34:43	मीन	09:41:09
9	मीन	24:47:34	मेष	09:53:59
10	मेष	25:00:24	वृष	10:06:50
11	वृष	25:00:24	मिथुन	09:53:59
12	मिथुन	24:47:34	कर्क	09:41:09

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	09:28:18
2	कन्या	08:06:21
3	तुला	08:59:00
4	वृश्चिक	10:06:50
5	धनु	10:21:26
6	मकर	10:01:34
7	कुम्भ	09:28:18
8	मीन	08:06:21
9	मेष	08:59:00
10	वृष	10:06:50
11	मिथुन	10:21:26
12	कर्क	10:01:34

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य

चलित कुंडली

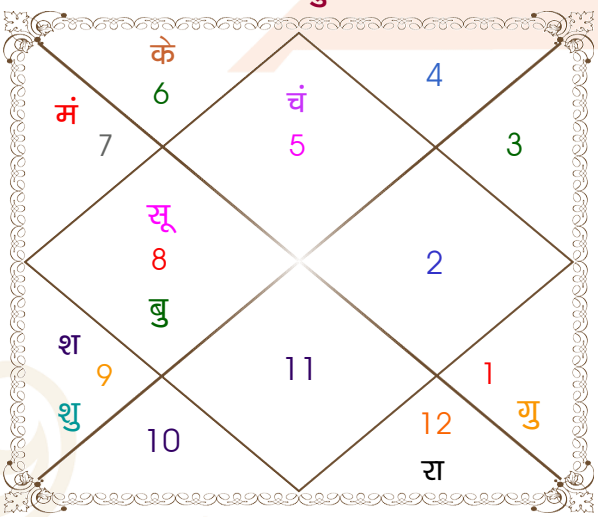

भाव कुंडली

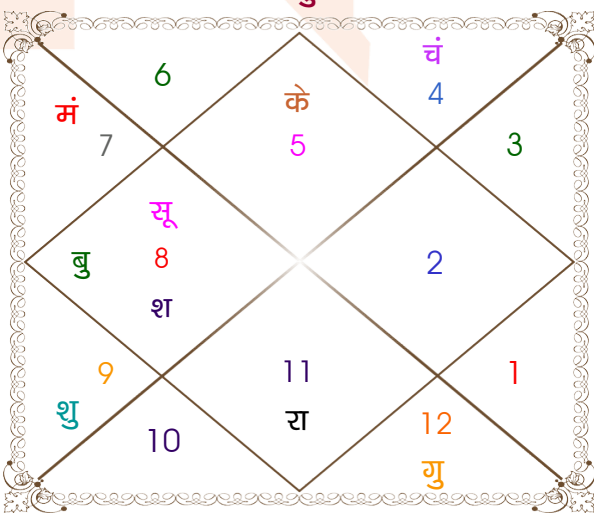

Pandit Srinivas Srimali, Pandit Jitendra Srimali
No. 130, Mint Street, 3rd floor, Sowcarpet, chennai - 600079
9884182821, 9841085352
Jksrimali27@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 6 वर्ष 9 मास 15 दिन

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
10/12/1987		26/09/1994		25/09/2001		25/09/2021		26/09/2027	
26/09/1994		25/09/2001		25/09/2021		26/09/2027		25/09/2037	
	00/00/0000	केतु	22/02/1995	शुक्र	25/01/2005	सूर्य	13/01/2022	चंद्र	26/07/2028
	00/00/0000	शुक्र	23/04/1996	सूर्य	25/01/2006	चंद्र	15/07/2022	मंगल	24/02/2029
	00/00/0000	सूर्य	29/08/1996	चंद्र	26/09/2007	मंगल	19/11/2022	राहु	26/08/2030
	00/00/0000	चंद्र	30/03/1997	मंगल	25/11/2008	राहु	14/10/2023	गुरु	26/12/2031
	00/00/0000	मंगल	26/08/1997	राहु	26/11/2011	गुरु	01/08/2024	शनि	26/07/2033
	10/12/1987	राहु	13/09/1998	गुरु	27/07/2014	शनि	14/07/2025	बुध	26/12/2034
राहु	11/10/1989	गुरु	20/08/1999	शनि	25/09/2017	बुध	21/05/2026	केतु	27/07/2035
गुरु	16/01/1992	शनि	28/09/2000	बुध	26/07/2020	केतु	26/09/2026	शुक्र	27/03/2037
शनि	26/09/1994	बुध	25/09/2001	केतु	25/09/2021	शुक्र	26/09/2027	सूर्य	25/09/2037

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
25/09/2037		25/09/2044		26/09/2062		26/09/2078		25/09/2097	
25/09/2044		26/09/2062		26/09/2078		25/09/2097		00/00/0000	
मंगल	21/02/2038	राहु	08/06/2047	गुरु	13/11/2064	शनि	28/09/2081	बुध	22/02/2100
राहु	12/03/2039	गुरु	01/11/2049	शनि	27/05/2067	बुध	08/06/2084	केतु	19/02/2101
गुरु	16/02/2040	शनि	07/09/2052	बुध	01/09/2069	केतु	17/07/2085	शुक्र	21/12/2103
शनि	27/03/2041	बुध	27/03/2055	केतु	08/08/2070	शुक्र	16/09/2088	सूर्य	27/10/2104
बुध	24/03/2042	केतु	14/04/2056	शुक्र	08/04/2073	सूर्य	29/08/2089	चंद्र	28/03/2106
केतु	20/08/2042	शुक्र	14/04/2059	सूर्य	25/01/2074	चंद्र	30/03/2091	मंगल	25/03/2107
शुक्र	20/10/2043	सूर्य	08/03/2060	चंद्र	27/05/2075	मंगल	08/05/2092	राहु	11/12/2107
सूर्य	25/02/2044	चंद्र	07/09/2061	मंगल	02/05/2076	राहु	15/03/2095		00/00/0000
चंद्र	25/09/2044	मंगल	26/09/2062	राहु	26/09/2078	गुरु	25/09/2097		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 6 वर्ष 9 मा 18 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Pandit Srinivas Srimali, Pandit Jitendra Srimali
No. 130, Mint Street, 3rd floor, Sowcarpet, chennai - 600079
9884182821, 9841085352
Jksrimali27@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
14/07/2025		21/05/2026		26/09/2026		26/09/2027		26/07/2028	
21/05/2026		26/09/2026		26/09/2027		26/07/2028		24/02/2029	
बुध	27/08/2025	केतु	28/05/2026	शुक्र	25/11/2026	चंद्र	21/10/2027	मंगल	08/08/2028
केतु	14/09/2025	शुक्र	19/06/2026	सूर्य	14/12/2026	मंगल	08/11/2027	राहु	09/09/2028
शुक्र	05/11/2025	सूर्य	25/06/2026	चंद्र	13/01/2027	राहु	24/12/2027	गुरु	07/10/2028
सूर्य	21/11/2025	चंद्र	06/07/2026	मंगल	03/02/2027	गुरु	02/02/2028	शनि	10/11/2028
चंद्र	17/12/2025	मंगल	13/07/2026	राहु	30/03/2027	शनि	21/03/2028	बुध	10/12/2028
मंगल	04/01/2026	राहु	01/08/2026	गुरु	18/05/2027	बुध	04/05/2028	केतु	22/12/2028
राहु	19/02/2026	गुरु	18/08/2026	शनि	15/07/2027	केतु	21/05/2028	शुक्र	27/01/2029
गुरु	02/04/2026	शनि	07/09/2026	बुध	05/09/2027	शुक्र	11/07/2028	सूर्य	07/02/2029
शनि	21/05/2026	बुध	26/09/2026	केतु	26/09/2027	सूर्य	26/07/2028	चंद्र	24/02/2029

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
24/02/2029		26/08/2030		26/12/2031		26/07/2033		26/12/2034	
26/08/2030		26/12/2031		26/07/2033		26/12/2034		27/07/2035	
राहु	17/05/2029	गुरु	30/10/2030	शनि	27/03/2032	बुध	08/10/2033	केतु	07/01/2035
गुरु	30/07/2029	शनि	15/01/2031	बुध	17/06/2032	केतु	07/11/2033	शुक्र	12/02/2035
शनि	24/10/2029	बुध	25/03/2031	केतु	20/07/2032	शुक्र	01/02/2034	सूर्य	22/02/2035
बुध	10/01/2030	केतु	23/04/2031	शुक्र	25/10/2032	सूर्य	27/02/2034	चंद्र	12/03/2035
केतु	11/02/2030	शुक्र	13/07/2031	सूर्य	23/11/2032	चंद्र	11/04/2034	मंगल	25/03/2035
शुक्र	13/05/2030	सूर्य	06/08/2031	चंद्र	10/01/2033	मंगल	11/05/2034	राहु	26/04/2035
सूर्य	10/06/2030	चंद्र	16/09/2031	मंगल	13/02/2033	राहु	28/07/2034	गुरु	24/05/2035
चंद्र	25/07/2030	मंगल	14/10/2031	राहु	10/05/2033	गुरु	05/10/2034	शनि	27/06/2035
मंगल	26/08/2030	राहु	26/12/2031	गुरु	26/07/2033	शनि	26/12/2034	बुध	27/07/2035

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
27/07/2035		27/03/2037		25/09/2037		21/02/2038		12/03/2039	
27/03/2037		25/09/2037		21/02/2038		12/03/2039		16/02/2040	
शुक्र	05/11/2035	सूर्य	05/04/2037	मंगल	04/10/2037	राहु	20/04/2038	गुरु	26/04/2039
सूर्य	06/12/2035	चंद्र	20/04/2037	राहु	26/10/2037	गुरु	10/06/2038	शनि	19/06/2039
चंद्र	26/01/2036	मंगल	01/05/2037	गुरु	15/11/2037	शनि	10/08/2038	बुध	07/08/2039
मंगल	01/03/2036	राहु	28/05/2037	शनि	09/12/2037	बुध	03/10/2038	केतु	27/08/2039
राहु	31/05/2036	गुरु	21/06/2037	बुध	30/12/2037	केतु	26/10/2038	शुक्र	22/10/2039
गुरु	21/08/2036	शनि	20/07/2037	केतु	08/01/2038	शुक्र	28/12/2038	सूर्य	08/11/2039
शनि	25/11/2036	बुध	15/08/2037	शुक्र	02/02/2038	सूर्य	17/01/2039	चंद्र	07/12/2039
बुध	19/02/2037	केतु	26/08/2037	सूर्य	09/02/2038	चंद्र	18/02/2039	मंगल	27/12/2039
केतु	27/03/2037	शुक्र	25/09/2037	चंद्र	21/02/2038	मंगल	12/03/2039	राहु	16/02/2040

Pandit Srinivas Srimali, Pandit Jitendra Srimali
No. 130, Mint Street, 3rd floor, Sowcarpet, chennai - 600079
9884182821, 9841085352
Jksrimali27@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	2
मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 2
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहुँ
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	91%	सुख, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	78%	पराक्रम, भाग्योदय, सुख
हीरा	शुक्र	78%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
पन्ना	बुध	73%	सुख, धनार्जन, धन
लहसुनिया	केतु	66%	धन, सुख
पुखराज	गुरु	43%	दुर्घटना, सन्तति कष्ट
मोती	चंद्र	9%	व्यय
नीलम	शनि	9%	ग्रह कलेश, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट
गोमेद	राहु	0%	दुर्घटना

रत्न की शुभता

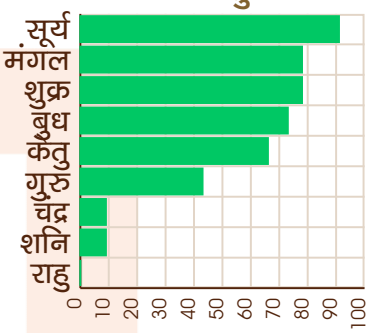

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	26/09/1994	97%	0%	78%	86%	43%	84%	9%	0%	66%
केतु	25/09/2001	78%	0%	84%	73%	43%	84%	0%	0%	78%
शुक्र	25/09/2021	78%	0%	78%	80%	43%	91%	22%	0%	72%
सूर्य	26/09/2027	100%	21%	84%	73%	53%	66%	0%	0%	53%
चंद्र	25/09/2037	97%	34%	78%	80%	43%	78%	9%	0%	53%
मंगल	25/09/2044	97%	21%	91%	61%	53%	78%	9%	0%	72%
राहु	26/09/2062	78%	0%	66%	73%	43%	84%	22%	0%	53%
गुरु	26/09/2078	97%	21%	84%	61%	59%	66%	9%	0%	66%
शनि	25/09/2097	78%	0%	66%	80%	43%	84%	34%	0%	53%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढेसाती प्रथम ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढेसाती द्वितीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढेसाती तृतीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	धनार्जन
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	व्यय
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति चन्द्रमा से चतुर्थ भाव में है। अतः आप चन्द्र कुंडली से मांगलिक है। चूंकि यह योग भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों तथा चल एवं अचल सम्पति को परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगे। शारीरिक रूप से आप सामान्यतया स्वस्थ ही रहेंगे तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपके विवाह में किंचित विलम्ब होगा तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी रूकावटें उत्पन्न होगी परन्तु अन्ततः इस में सफलता मिल ही जाएगी। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा लेकिन इसका दाम्पत्य जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा तथा सुख पूर्वक आप अपना समय व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

चतुर्थ भावस्थ मंगल के प्रभाव से आप जीवन में भौतिक सुख संसाधनों को परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगे। इसकी सप्तम भाव पर दृष्टि से आपकी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में उग्रता रहेगी लेकिन सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप कार्य क्षेत्र में परिश्रमपूर्वक नित्य उन्नतिशील रहेंगे। साथ ही किसी महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति हो सकती है तथा समाज से इच्छित मान सम्मान अर्जित करने में भी आपको सफलता मिलेगी। एकादश भाव पर दृष्टि के प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति सामान्यतया अनुकूल रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा। इसके अतिरिक्त परिश्रम पूर्वक आय स्रोतों की वृद्धि करने में भी आप समर्थ रहेंगे।

मंगल की शुभता में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे

पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इस दोष के भंग होने पर आपको इच्छित मात्रा में सांसारिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी तथा चल एवं अचल सम्पति को बनाने में भी आप समर्थ रहेंगे। साथ ही सर्वत्र सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य से युक्त होकर आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा। आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी एवं जीवन में एक दूसरे को सुख तथा सहयोग प्रदान करके आप आत्मिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में कर्कोटक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक का पैतृक धन सम्पत्ति आंशिक रूप में नुकसान होता है। भाग्य उदय होने में थोड़ी बहुत रुकावट आती है परन्तु कालान्तर में वह व्यवधान स्वतः हट जाता है। व्यापार कार्य में विशेष रूप से परिश्रम करने पर लाभ मिलता है। नौकरी में थोड़ा बहुत व्यवधान उपस्थित होता है और यदि नौकरी मिल जाती है तो पदावनति होने का भय रहता है।

इस योग के प्रभाव से जातक को अपनी वाणी पर नियन्त्रण नहीं रहता और दूषित भी हो जाता है। जातक बात-बात पर लड़ाई झगड़े करने को तैयार हो जाता है। जातक को परिश्रम करने के बावजूद भी सही फल प्राप्त नहीं होता है। उधार में दिया हुआ द्रव्य प्रायः वापस नहीं आता है और जातक थोड़ा बहुत चिड़चिड़ा हो जाता है एवं कभी-कभी झंझट करने को भी तैयार हो जाता है तथा मानसिक परेशानी घेरे रहती है। कभी रोग व्याधि शरीर में लग जाती है और जातक को दुर्घटना का भय बना रहता है। आय की अपेक्षा व्यय अधिक होने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। परन्तु विशेष परिश्रम करने पर आर्थिक स्थिति सामान्य हो जाती है।

इस योग के प्रभाव से जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे समय-समय पर षड्यन्त्र रचते रहते हैं, पर अपने कार्य में वे प्रायः सफल नहीं होते। जातक को अपने कुटुम्बियों से अपयश मिलता है एवं आत्मीय जन भी सम्मान नहीं देते हैं। अपने मित्रगणों के द्वारा छले जाते हैं। जिस कारण जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।

10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- पंचम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है।

आपकी कुडली में सूर्य और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यह्रदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो

आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

चतुर्थभाव में सूर्य हो तो जातक परमसुन्दर, कठोर, पितृधननाशक, चिन्तास्त, भाईयों से वैर करने वाला, गुप्तविद्या प्रिय एवं वाहन सुखहीन होता है।

वृश्चिक राशि में रवि हो तो जातक साहसी, लोभी, चिकित्सक, लोकमान्य, क्रोधी उद्ययोगी, उदररोगी, पुलिस अधिकारी एवं सेना में उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय होंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपका यत्नपूर्वक सहयोग करते रहेंगे। पिता से आपको धन, वाहन तथा अन्य प्रकार से सम्पत्ति अर्जित करते रहेंगे। इसके साथ ही नौकरी तथा व्यापार में भी आप उनसे सहयोग प्राप्त करते रहेंगे तथा उन्हीं के सहयोग से उन्नति भी करेंगे।

आप के मन में उनके प्रति सम्मान एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन में भी रूचि रहेगी। आपके परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु वह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में आप हमेशा उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगे तथा अवसरानुकूल वांछित सहायता भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्तप्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।,

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पडेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोडकर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

मंगल

तृतीयभाव में मंगल हो तो जातक कटुभाष, भ्रतृकष्टकारक, प्रदीप्त जठराग्निवाला, बलवान्, बन्धुहीन, सर्वगुणी, साहसी, धैर्यवान् प्रसिद्ध एवं शूरवीर होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। शक्ति, साहस तथा पराकम से वे युक्त रहेंगे। साथ ही जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको यथायोग्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। धन धान्य से भी वे युक्त रहेंगे एवं समयानुसार आपकी आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में आपकी पूरी सहायता करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी एवं सर्वदा विषम परिस्थितियों में भी उनका पूर्ण सहयोग करेंगे। आप के परस्पर संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा मतवैमिन्यता के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु वह अल्प समय के लिए रहेगा कुछ समय बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करेंगे। इस प्रकार आप भाई बहिनों के सुख मध्यम रूप से ही अर्जित कर सकेंगे।

बुध

चतुर्थभाव में बुध हो तो जातक पण्डित भाग्यवान् नीतिवान्, नीतिज्ञ, लेखक, विद्वान्, बन्धुप्रेमी, उदार, गतिप्रिय, आलसी , स्थूलदेही, वाहनसुखी एवं दानी होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मुर्ख, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिकिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान्, लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायवान् एवं आस्तिक होता है।

धनु राशि में शुक्र हो तो जातक धनी, बलशाली, स्वोपार्जित द्रव्य द्वारा पुण्य करने वाला, विद्वान, सुन्दर, लोकमान्य, राज्यमान्य, सुखी घरेलू जीवन, उच्चपद की प्राप्ति एवं प्रभावशाली होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन,वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरघ्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

राहु

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- सूर्य
(25/09/2021 - 26/09/2027)

सूर्य की महादशा 25/09/2021 को आरम्भ होगी और 6 वर्ष की अवधि के बाद 26/09/2027 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। सूर्य यश, प्रतिष्ठा, शासकीय कृपा, उच्चाधिकार तथा सामान्य सफलता का प्रतिनिधित्व करता है और चतुर्थ भाव माता, धन गाड़ी और पारिवारिक खुशी को सूचित करता है। अतः इस दशा में आप को धन-सम्पत्ति और गाड़ी की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

आप सतत् उत्साही और क्रियाशील रहेंगे। किन्तु आपको अधिक परिश्रम तथा उत्तेजना से बचने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि इनके कारण आपको रक्तचाप तथा हृदय-वेदना जैसी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। किन्तु उचित उपाय से इससे बचा जा सकता है। सम्बन्धियों के साथ संबंधों में तनाव के कारण मानसिक शान्ति में कमी हो सकती है।

अर्थ :

इस दशा के दौरान आपको धन की प्राप्ति होगी। आपको अचल तथा पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपको इस अवधि में यातायात से लाभ होगा। आपको भूमि तथा भवन की प्राप्ति और भूमि-उत्पाद से लाभ होगा। इस दशा में सट्टे का परित्याग करें क्योंकि यह लाभदायक नहीं होगा।

व्यवसाय :

दशम भाव पर सूर्य की दृष्टि जीवन-वृत्ति के लिये अत्यंत शुभ है। उन्नति, शक्ति तथा अधिकार प्राप्ति की सम्भावना है। आपको शासन अथवा अन्य उच्च प्राधिकारों से मान्यता प्राप्त हो सकती है। आप अपने सभी कार्यों में सफल होंगे। आपको अपने उच्चाधिकारिओं से सद्भाव तथा सहयोग मिलेगा। आप प्रशासनिक कार्यों में श्रेष्ठ रहेंगे। आपको नौकरी में पदोन्नति मिलेगी और आमदनी तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। व्यवसायियों को साझेदारी के व्यवसाय में लाभ मिलेगा। इस दशा में आप कुछ अनुबन्ध कर सकते हैं। व्यवसाय से सम्बन्ध यात्रा हो सकती है। इस दशा में व्यवसाय के क्षेत्र में आपकी आकांक्षाओं की पूर्ति हो सकती है।

पारिवारिक जीवन :

यदि आप अपनी इच्छाओं को दूसरों पर आरोपित न करें तो आपको पारिवारिक सुख मिलेगा। आप समाज के प्रति निष्ठा रखते हैं और उदार हैं। आपके अनेक मित्र हैं, किन्तु आप स्वच्छन्द हैं और आपकी इच्छाशक्ति अत्यन्त प्रबल है जिससे आपको कभी-कभी विरोध का सामना करना पड़ सकता है। सन्तानों से सम्बन्ध में कभी-कभी तनाव उत्पन्न हो सकते हैं। आपके जीवन साथी को समृद्धि, कार्य के अच्छे अवसर, यश, प्रतिष्ठा, शक्ति, अधिकार आदि की

प्राप्ति होगी। आपकी माता के स्वास्थ्य को देख-रेख की जरूरत है। आपको पैतृक सम्पत्ति तथा पिता से लाभ की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को इस अवधि में लाभ मिलेगा ओर उनके रुके हुए कार्य पूरे होंगे। बड़े भाई-बहनों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उन्हें अपने कार्यों में सफलता तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। उनके साथ आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप भौतिकी तथा विद्युत-अभियंत्रणा जैसे विज्ञान विषयों और विज्ञान में अच्छा करेंगे। आपको यश और ख्याति की प्राप्ति होगी और बहुत से लोग आपकी सराहना करेंगे।

अंर्तदशा :- सूर्य - शनि
(01/08/2024 - 14/07/2025)

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 01/08/2024 को प्रारंभ होगी और 14/07/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में माता के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। माता-पिता से लाभ और सम्मान प्राप्त होंगे। जमीन-जायदाद से युक्त रहेंगे। सरकार से सहयोग मिलेगा। रोगनिरोधक क्षमता उत्तम होगी। शत्रुओं पर विजय होगी। मामा या ममेरे भाइयों से लाभ होगा। उत्तम स्वास्थ्य, उच्चपद और लोकप्रियता के योग हैं।

आपके जीवनसाथी को लाभ होगा और कार्यक्षेत्र में प्रगति करेंगे। आपको ससुराल से लाभ होगा। माता की आर्थिक स्थिति उत्तम होगी और वे अचल संपत्ति क्रय कर सकती हैं। भाई-बहनों के लिए उच्चपद और रोगनिरोधक क्षमता का संकेत है। आपकी संतान को परीक्षा में उत्तम अंक लाने के लिए कठोर परिश्रम करना होगा। इस मामले में उनसे आपका विवाद हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो कठोर परिश्रम और धन का योग है। परामर्शदाता सफलता और धन अर्जित करेंगे। व्यापारीगण उत्साह से भरपूर रहेंगे, लाभ कमाएंगे।

अंर्तदशा :- सूर्य - बुध
(14/07/2025 - 21/05/2026)

आपकी सूर्य की महादशा 25/09/2021 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। यह 14/07/2025 को प्रारंभ होकर 21/05/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, शिक्षा, वाणी का कारक है।

इस अवधि में आप भूमि प्राप्त करेंगे और सुख-समृद्धि से परिपूर्ण रहेंगे। सज्जन पुरुषों से आपकी मित्रता रहेगी और मामापक्ष के लोगों से संबंध मधुर रहेंगे। आपका निवास स्थान बदल सकता है। जमीन-जायदाद या विरासत से धन मिल सकता है। माता से सुख मिलेगा। जीवनसाथी के परिवार से जायदाद मिल सकती है। शत्रुओं पर विजय होगी। कार्यस्थल पर लाभकारी परिवर्तन हो सकते हैं। उद्योग, व्यापार, विज्ञान या संचार माध्यम से लाभ होगा। आपको उच्चपद प्राप्त हो सकता है।

जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार को धन और नाम प्राप्त होंगे। आपके पिता को उपहार आदि द्वारा बिना परिश्रम का धन मिल सकता है। उनकी रुचि अध्यात्म में हो सकती है। आपकी माता के लिए समय भाग्यशाली है। आपके उनके साथ संबंध मधुर रहेंगे। छोटे भाई-बहन धन कमाएंगे, बड़े भाई-बहनों का स्तर अपरिवर्तित रहेगा। आपकी संतान को स्पर्धा में सफलता मिलेगी और कार्य में कोई बाधा नहीं आएगी।

अगर आप सेवारत हैं तो वेतन में बढ़ोत्तरी होगी। परामर्शदाताओं का समय

सर्वोत्तम रहेगा। व्यापारियों को कठिन परिश्रम करना होगा।

छाती, हृदय और स्नायुतंत्र के रोगों से बचाव करें। अनिष्ट से बचने के लिए दुर्गाजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - केतु
(21/05/2026 - 26/09/2026)

आपके लिए सूर्य की महादशा 25/09/2021 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 21/05/2026 को आरंभ होकर 26/09/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान ओर कष्टों का कारक है।

इस अवधि में आपका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। धन संचित होगा और सब सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। रुपये के लेन-देन में सावधान रहें, क्योंकि मामूली नुकसान हो सकता है। अगर सतर्कता से काम करेंगे तो शत्रुओं पर विजय मिलेगी। अप्रत्याशित धन मिल सकता है। अध्यात्म में सफल रहेंगे। जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार के माध्यम से धनागम होगा। परिवार से सकारात्मक संपर्क बनाये रखें।

आपके जीवन साथी को परिवारजनों से मधुर संबंध रखने चाहिएं। पिता भाग्यशाली रहेंगे और कर्ज़ से मुक्ति पाएंगे। माता को सफलता मिलेगी, वे भूमि क्रय करेंगी, यात्रा संभव है। भाई-बहनों के कार्य या निवास में परिवर्तन हो सकता है, माता से संभव मधुर रहेंगे, शिक्षा उत्तम होगी और अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है।

आपकी संतान सफल होगी; आपको उनसे अच्छे संबंध बनाये रखने चाहिएं। उन्हें तकनीकी कार्य मिल सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो परिणाम मिश्रिम रहेंगे, उच्चाधिकारियों से मतभेद हो सकते हैं। परामर्शदाताओं को आर्थिक स्थिति की समीक्षा करनी चाहिए। व्यापारियों को ज्यादा पांव नहीं फैलाना ही श्रेयस्कर होगा।

संक्रमण, फोड़े, नेत्र रोगों से बचें। अरिष्ट से बचाव के लिए मंगलवार, शनिवार को व्रत करें और श्वान को भोजन दें।

अंर्तदशा :- सूर्य - शुक्र
(26/09/2026 - 26/09/2027)

सूर्य महादशा में शुक्र अंतर्दशा होगी।

इस अंतर्दशा की अवधि में आपको संतान से सुख मिलेगा। संतान का जन्म हो सकता है। दांपत्य सुख, कार्य में उन्नत स्थिति और शत्रुओं पर विजय का संकेत है। रिश्तेदारों के साथ संबंध उत्तम रहेंगे। समय खुशी से बीतेगा। सट्टेबाजी या निवेश से लाभ संभव है। फिल्म, संगीत और कला में रुचि रहेगी। वाहन एवं अन्य सुख रहेंगे। संतान से संबंध मधुर

महादशा :– चन्द्र
(26/09/2027 - 25/09/2037)

चंद्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 26/09/2027 को आरंभ और 25/09/2037 को समाप्त होगी।

चन्द्र द्वादश भाव में अवस्थित है और उसे प्रबल कर रहा है। द्वादश भाव नुकसान और विघ्न, क्षति, और अपव्यय, कड़ी मजदूरी और धोखा, उदार दान, परिवार से अलगाव, छिपे दुश्मन, अस्पताल में भर्ती, छल-कपट, घोटाला, अपमान तथा गुप्त दुःख का सूचक है। अतः दस वर्षों की यह अवधि मिश्रित प्रतिक्रियाओं से भरी होगी जिसमें आप उत्थान-पतन दोनों की आशा कर सकते हैं।

स्वास्थ्य :

आपका जीवन सामान्य रहेगा, किन्तु, कुछ विकृति की सम्भावना है। आपकी आँखें इस दशा में कमजोर हो सकती हैं, अतः इनकी देख भाल करें। आपका मस्तिष्क संकुचित हो सकता है जिससे आपका जीवन अन्धकारमय हो जाएगा और आप अलग-थलग पड़ जाएंगे।

अर्थ और सम्पत्ति : अर्थ की दृष्टि से यह अवधि आपके लिए सामान्य रहेगी और चन्द्र की इस दशा के दौरान आप अपनी सम्पत्तियों व बैंक बैलेंस में वृद्धि करने की स्थिति में नहीं होंगे। जहाँ-तहाँ निवेश करने के प्रति सावधानी बरतें, इससे इस दशा में नुकसान हो सकता है।

व्यवसाय :

आप अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट रहेंगे और व्यवसाय में परिवर्तन के लिए स्थान बदल सकते हैं। मार्गदर्शन प्राप्त करने तथा नये व्यवसाय आरम्भ के क्रम में आप कहीं दूर भी जा सकते हैं। अपने सभी सौदों में सावधानी बरतें क्योंकि आप जो भी नया व्यवसाय आरम्भ करेंगे उसमें नुकसान हो सकता है।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन-साथी आपके सहायक होंगे और आप अपने पारिवारिक जीवन का

भरपूर आनन्द उठाएंगे। आपका पारिवारिक जीवन सुखमय और सौहार्द्रपूर्ण होगा। आपके बच्चे सहायक और आज्ञाकारी होंगे और परिवार में स्वस्थ वातावरण का निर्माण करेंगे। किन्तु इस दशा में बीमारी तथा अन्य विषयों पर अत्यधिक व्यय होगा। आप धार्मिक कार्यों पर भी व्यय करेंगे।

अंर्तदशा :- चन्द्र - चन्द्र
(26/09/2027 - 26/07/2028)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 26/09/2027 को प्रारंभ होकर 25/09/2037 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 26/09/2027 को प्रारंभ होकर 26/07/2028 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। इस अवधि में आप रहस्य विद्या के अध्ययन में रुचि लेंगे। मष्तिष्क विचलित रह सकता है। चंद्र मन का कारक है, अतः आप अत्याधिक संवेदनशील होने से बचें।

किसी कांड में फंसने पर धन का अपव्यय हो सकता है, अतः सावधानी आवश्यक है।

द्वादश में चंद्र की स्थिति अशुभ मानी जाती है। अतः चंद्र के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें। शाम को चंद्रोदय के समय चंद्रमा को चंद्र मंत्र का उच्चारण करते हुए कच्चा दूध अर्पित करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - मंगल
(26/07/2028 - 24/02/2029)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 26/09/2027 को प्रारंभ होकर 25/09/2037 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 26/07/2028 को प्रारंभ होकर 24/02/2029 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका के तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। तृतीय भाव में स्थित होकर मंगल कुंडली के 6, 9, 10 भावों पर दृष्टिपात कर रहा है।

मंगल ऊर्जा का कारक है। इस अंतर्दशा में आप प्रसिद्ध, साहसी, धैर्यवान, वाहनयुक्त होंगे। बहुत से विषयों के माहिर होंगे। दुःसाहसी होने के कारण घर में गलतफहमी हो सकती है; दुर्घटना भी संभव है। कटुता के कारण आपके भाई-बहनों को भी हानि हो सकती है।

कान के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए प्रतिदिन भौम गायत्री मंत्र के 108 बार जाप करें।

अंर्तदशा :– चन्द्र – राहु
(24/02/2029 - 26/08/2030)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह महादशा 26/09/2027 को प्रारंभ हुई और 25/09/2037 को समाप्त होगी। चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की अवधि 18 मास रहेगी। आपके लिए यह 24/02/2029 को प्रारंभ होकर 26/08/2030 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्रिका के सप्तम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। राहु छाया ग्रह है जो अस्तित्वहीन है मगर ग्रहों के समान प्रभावशाली है। इसका शुभत्व इसके निवास और युत ग्रह के अनुसार होता है।

इस अवधि में आपको बहुत सावधान रहना चाहिए क्योंकि समाज में अपमान हो सकता है। कोई व्याधि हो सकती है। झगड़े विवाद से बचें। समय कठिन हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के गायत्री मंत्र का जाप करें।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में, कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, अपने इष्टदेव का ध्यान करते हुए, बायें हाथ की मध्यमा उंगली में रात्रि भोजन के बाद धारण करें।